प्रशंसा नहीं प्रस्तुति करो

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

व्यक्तित्व विकास कैसे हो यह जानना आवश्यक है। आज का मानव प्रशंसा प्रिय हो गया है। प्रशंसा सबको प्रिय लगती है। प्रशंसा और प्रस्तुति में बहुत अन्तर है। कुछ लोग कार्य न करके केवल चापलूसी के आधार पर प्रशंसा प्राप्त करना चाहते हैं। वे जिसके योग्य नहीं है उस योग्यता को दिखाना चाहते हैं। गायक, कलाकार, वक्ता आदि अच्छा प्रदर्शन करते हैं तो लोग उनकी प्रशंसा करते हैं। अधिकारी यदि अच्छा कार्य करता हैं तो जनता उसकी प्रशंसा करती है। उसके प्रदर्शन के आधार पर सरकार उसे पुरस्कृत भी करती है। स्वरसम्राज्ञी लता मंगेसकर अपने गायन के द्वारा अमर हो गयी है। उसके स्वरों को सुनकर लोग मन्त्रमुग्ध हो जाते हैं और उसकी प्रशंसा करते है। ऐसे व्यक्तियों में अपने प्रस्तुति के आधार पर प्रशंसा अर्जित की है। अध्यापक कक्षा में यदि अच्छा पढ़ाता है तो विद्यार्थी उसकी प्रशंसा करते हैं। पढ़ाते सभी हैं किन्तु प्रशंसा उन्हीं को प्राप्त होती है जो अपने कार्यों से विद्यार्थी को अपनी तरफ आकर्षित कर लेता है। इसी प्रकार हर क्षेत्र में अच्छे कार्य करने वालों को प्रशंसा प्राप्त होती हैं। यदि प्रस्तुति अच्छी होती हैं तो प्रशंसा मिलती है। यदि प्रस्तुति ठीक नहीं है तो निन्दा भी प्राप्त होती है। कोई भी हो जो कार्य उसे दिया गया है यदि उसको वह ठीक नहीं करता तो उसकी प्रस्तुति ठीक नहीं होती। उसकी आलोचना होती है। जनता को समस्या का समाधान मिलना जरूरी होता है। मानव जीवन निर्माण के अनेक क्षेत्र है। अपनी बुद्धि के अनुसार मार्ग का चयन करने में सभी स्वतन्त्र हैं। जिस मार्ग को चुनना है। उसे चुनकर उस मार्ग पर दृढ़ता पूर्वक चलकर सफलता प्राप्त करनी चाहिए। किसान यदि अच्छी खेती करता है और अन्न अधिक उत्पन्न करता हैं तो उसकी प्रशंसा होती है। प्रस्तुति के साथ प्रशंसा जुड़ी है। यदि प्रस्तुति अच्छी है तो प्रशंसा अपने आप प्राप्त होती है।

आज का युग प्रतियोगिता का युग है। इस युग में वही सफलता प्राप्त करता है, जिसकी प्रस्तुति अच्छी है। वकील का पूरा व्यक्तित्व प्रस्तुति पर निर्भर होता है। यदि वह न्यायाधीश के

समक्ष अपना पक्ष अच्छे ढ़ंग से प्रस्तुत करता है तो वह मुकदमें में जीत जाता है। उसका नाम प्रसिद्ध होता है और वह प्रशंसा पाता है। इसी प्रकार औद्योगिक क्षेत्र में भी एक ही प्रकार के उत्पाद को अनेक औद्योगिक संस्थान उत्पन्न करते हैं। किन्तु उसीका उत्पादन लोग ज्यादा पसन्द करते हैं जिसमें गुणवता रहती है। बाजार में अनेक दुकाने होती हैं, किन्तु ग्राहक उसी दुकान पर जाता है, जहां सामान अच्छा और गुणवता पूर्ण रहता है। इसलिए प्रशंसा को न देखकर प्रस्तुति का मूल्यांकन होता है। आजकल लोग झूठी प्रशंसा सुनने के आदी हो गये हैं। झूठी प्रशंसा में अपने अस्तित्व को भी खो देते हैं। जो व्यक्ति प्रस्तुति करने की कला को जानता है, जीवन में उसकी हार नहीं होती। मानव परिवार से लेकर राष्ट्र तक अपने सम्बन्धों को बनाता है। परिवार में अनेक सदस्य होते हैं। सब की रुचि और सबका मिजाज अलग–अलग होता है। कोई उग्र स्वभाव का होता है तो कोई नम्र स्वभाव का। सभी को एक साथ रहने के लिए तालमेल बैठाना आवश्यक होता है। परिवार में सामंजस्य बनाये रखने के लिए बड़ों का सम्मान करना पड़ता है। बड़ों का भी यह कर्त्तव्य है कि वे छोटों को आदर दें और उनके प्रति स्नेह का भाव रखें। जहां आवश्यक हो उन्हें सुझाव देकर अपनी बात को उनके सामने रखें। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मानव को एक दूसरे के साथ तालमेल बैठाना होता है। यह शिक्षा परिवार से ही प्रारंभ हेाती है। परिवार को नागरिकता की प्रथम पाठशाला कहा जाता है।

बालक को माता–पिता और अन्य पारिवारिकजन जो कुछ भी शिक्षा देते हैं उसी के अनुरूप बालक के चरित्र का निर्माण होता है। जब बच्चा विद्यालय में पढ़ने के लिए जाता है तो वहां अनेक वस्तुओं से उसका सम्पर्क होता है। धीरे–धीरे बच्चा सभी के साथ अपने को प्रस्तुत करके रहना सीखता है और पढ़ना सीखता है। धीरे–धीरे यह भावना और आगे बढ़ती है और वह सबके साथ घुल–मिल जाता है। कोई भी खेल हो जब उस खेल को टीम भावना से खेला जाता है तो वियजश्री अवश्य मिलती है। यदि खिलाड़ियों की प्रस्तुति ठीक न हो तो खेल को जीतना बड़ा मुश्किल हो जायेगा। क्रिकेट के मेच में दो देश जब आमने–सामने प्रतिद्वन्द्वी के रूप में क्रिकेट खेलते हैं तो हर दल को बहुत ही अच्छा प्रदर्शन करना पड़ता है। इसी प्रकार सभी खेलों में इस भावना का होना आवश्यक है, तभी प्रशंसा प्राप्त होती है। अच्छी प्रस्तुति

करने से दृष्टिकोण विधेयात्मक बनता है और जिस व्यक्ति का विधेयात्मक दृष्टिकोण रहता है वहीं आगे बढ़ता है। निषेधात्मक दृष्टिकोण विनाश को बुलावा देता है और रचनात्मक दृष्टिकोण उन्नति प्रदान करता है। महान् व्यक्तियों का व्यक्तित्व सदैव रचनात्मक होता है। वे विवाद नहीं करना चाहते। यदि कोई उन्हें अपशब्द भी कह दे तो वे उसका प्रतिकार नहीं करते। विवाद तब होता है जब अहंकार टकराता है। अहंकार की लड़ाई में सबकुछ नष्ट हो जाता है। दो पक्षों में जब विवाद होता है तो दोनों न्यायालय की शरण में जाते हैं। विवाद के पहले यदि दोनों पक्ष बैठकर आपस में समझौता कर लें तो उन्हें न्यायालय में न जाना पड़े और एक–दूसरे के विरुद्ध लड़ना न पड़े, धन का नुकसान न हो। जो धन अनावश्यक रूप से न्यायालय में जाने से खर्च हो रहा है उसको किसी रचनात्मक कार्य में लगाया जाये तो उससे विकास होगा।